

***** एक फौजी की आत्मकथा *****

रक्तरंजित थी धरा और रक्तमय आकाश था,
मां पिता और भाई बन्धु नहीं कोई पास था।
मां के आंचल सी सुगंधित बह रही थी वो हवा
भारती का शस्त्र बन लड़ जाऊं ये विश्वास था।

जल रहा था क्रोध से और हृदय में आक्रोश था,
शत्रु से लड़ता हुआ हुंकार करता जोश था।
चल रही थी गोलियां हर रंग लहू में लाल था,
मार कर सौ को मरूंगा यह मेरा ऐलान था।

आहुति मैं दे रहा था, मां धरा को भक्त सा,
मेरे हाथों कर रहे थे रूद्र सेवन रक्त का।
गोलियों के शोर में भी गूंजती थी गर्जना,
तन भले मानुष मगर था रूप ये वनराज का।

केसरी संध्या में था मैं केसरी सा घूमता,
शत्रु की हर मृत्यु पे मैं मातृभूमि चूमता।
फिर कहीं से एक गोली मेरे सीने पर लगी,
लड़खड़ाए पैर लेकिन आग तन मन में लगी।

जल उठा प्रतिशोध से मैं रक्त अग्नि सी जगी,
थी धधकने श्वास और बांहें फड़कने सी लगी।
लुप्त होती प्राणवायु गर्जना कर फिर जगी,
छूटते थे श्वास फिर भी क्रोध की ज्वाला जगी।

भून्ता बंदूक से हर्ता मैं शत्रुप्राण का,
ज्यों हिमाला से चला हो तीर हिंदुस्तान का।
भागते पशुओं की भांति शेर देखो आ गया,
छिद्र तन में भी खड़ा था वीर हिंदुस्तान का।

शत्रुओं का काल था पर काल के था द्वार पर,
तन मेरा घायल मगर था मन प्रतिज्ञा में प्रखर।
रक्त सारा बह गया था धमनियां से सूखकर,
लग रहा जैसे रखा हो भार कोई शीश पर।

छा रहा सम्मुख अंधेरा, आंख होते बंद थे,
अंग मेरे शुष्क पत्तों से हवा में तैरते।
पीर देते रक्त बिंदु वीरता के चिन्ह थे,
शत्रु भी रुक से गए मेरी शहादत देखते।

जब गिरा मैं भूमि पर यूं लगा मां की गोद है,
चूमती मां शीश मेरा छूटता प्रतिशोध है।
मृत्यु भी करती तिलक, जाने ये कैसा योग है,
मन प्रफुल्लित हो रहा, किंचित नहीं अब क्रोध है।

(इसके बाद सैनिक की मृत्यु हो जाती है और उसके शरीर को तिरंगे में लपेटकर उसके घर लाया जाता है)

यार मेरे रो रहे हैं सोच जैसे हो गया,
आज उनका यार इतना बड़ा कैसे हो गया।
घूमता जो संग उनके रास्तों गलियारों में,
वह उन्हीं के माथे का सरताज कैसे हो गया।

हस पड़ा भाई कहा अब उठो भैया बस करो,
क्या रुलाओगे अभी यह खेल ना नीरस करो।
ना लडूंगा अब कभी तुमसे मेरा वादा रहा,

उठो लग जाओ गले अब मुझे ना बेबस करो।

बहन उसको कह पड़ी ओ मूर्ख तू क्यों रो रहा?
नींद पूरी ना हुई है तभी भैया सो रहा।

कल है राखी आज भैया उसी कारण आया है
थाल देखो सजाती हूं वक्त भी तो हो रहा।

वो खड़ी है प्रीत मेरी रीत बंधन तोड़ कर,
पूछती है क्यों चले हो मीत से मुख मोड़ कर।
इस बरस था ब्याह क्या दुल्हन बनाने आए हो?
लो उठो तैयार हूं मैं लाज अपनी छोड़कर।

रो पड़ी है मां मेरी मेरा जो माथा चूम कर,
बह पड़ी है आंसुओं की धार यह कैसी मुखर।
चाहता हूं खुद से लिपटे तिरंगे से पोंछ दूं,
जो मेरे मृत देह पर पड़ती है देखो किस कदर।

पिता मेरे मूक हैं सैलाब अपना रोककर,
देशभक्ति यज्ञ में औलाद अपनी झोंक कर।
मन ही मन में तौलते हैं क्या मिला क्या खो गया,
गर्व बढ़-बढ़ जा रहा मेरी शहादत सोच कर।

मृत पड़ी थी यूं मेरी जो देह माटी ढेर की,
मिन्नते कि ईश से दो मोहलतें कुछ देर की।
कोशिशें कीं उठ पड़ूं लग जाऊं सब के यूं गले,
एक पल का हर्ष दे मरे जाऊं फिर से ही भले।

ना जगी पर चेतना वह देह मिट्टी थी बनी,
चले सब लेकर उसे शमशान तक थी सनसनी।
आ गया है सपूत मां का घटाएं भी रो रही,
जिस धरा से था बना अब देह उसकी हो रही।

चल पड़ी इक्कीस बंदूके हवा में फिर वहीं,
उठी लपटें आसमां तक प्रार्थना सी कर रहीं।
बस गया सबके दिलों में आज सब फल हो गया,
हो गई मृत्यु सफल जीवन सफल ही हो गया